❋ 15 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

✺ ज्ञान-

1] एक है मानव बुद्धि, दूसरी है ईश्वरीय बुद्धि, फिर होगी दैवी बुद्धि। मानव बुद्धि है आसुरी बुद्धि। क्रिमिनल आइज्ड़ हैं ना। एक होते हैं सिविल-आइज्ड़, दूसरे होते हैं किमिनल-आइज्ड़। देवतायें हैं वाइसलेस, सिविल-आइज्ड़ और यहाँ कलियुगी मनुष्य हैं विशश किमिनल-आइज्ड़। उनके ख्यालात ही विशश होंगे।

2] अभी बाबा तुमको क्रिमिनल-आइज्ड़ से बदल से कर सिविल-आइज्ड़ बना रहे हैं। क्रिमिनल-आइज्ड़ में भी अनेक प्रकार होते हैं– कोई सेमी, कोई कैसे। जब सिविल-आइज्ड़ बन जायेंगे तब कर्मातीत अवस्था होगी फिर ब्रदर्ली-आइज़ (भाई-भाई की दृष्टि) बन जायेगी।

3] हम आत्मा बिना शरीर के आई, अब अशरीरी बनकर जाना है। इस पर एक कहानी है– उसने कहा तुम लाठी भी न उठाओ, वह भी पिछाड़ी में याद आयेगी। कोई भी चीज़ में ममत्व नहीं रखना है। बहुतों का ममत्व पुरानी वस्तुओं में रहता है।

4] जितना तुम सतोप्रधान बनते जायेंगे, खुशी का पारा उतना चढ़ता जायेगा। 5 हजार वर्ष पहले भी ऐसी खुशी थी। सतयुग में भी वही खुशी होगी। यहाँ भी खुशी रहेगी फिर यही खुशी साथ में ले जायेंगे। अन्त मती सो गति कहा जाता है ना। अभी की मत है फिर गति सतयुग में होगी। यह बहुत विचार सागर मंथन करना होता है।

5] जिसको जरा भी ऐसे-वैसे ख्यालात नहीं आते हैं वही पिछाड़ी में कर्मातीत अवस्था को पायेंगे। तुम ब्राह्मण ही सिविल-आइज्ड़ बन रहे हो। मनुष्य को कभी देवता नही कहा जा सकता है।

6] कहते हैं ज्ञान तो बहुत अच्छा है, जब फुर्सत होगी तब आऊंगा। बाबा समझाते हैं आयेगा कभी भी नहीं। यह तो बाप की इनसल्ट हुई। मनुष्य से देवता बनते हैं तो फौरन करना चाहिए ना। कल पर डाला तो माया नाक से पकड़ गटर में डाल देगी। कल-कल करते काल खा जायेगा। शुभ कार्य में देरी नहीं करनी चाहिए। काल तो सिर पर खड़ा है।

7] हाँ, कोई हरीओम या राम-राम करते हैं तो रिटर्न में करना पड़ता है। यह एक इज्ज़त देनी होती है। अहंकार नहीं दिखाना है।

8] अज्ञान की शक्ति क्रोध है और ज्ञान की शक्ति शान्ति है।

✺ योग-

1] अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तब 100 प्रतिशत सोल कॉन्सेस बन सकेंगे।

2] बाप कहते हैं मुझ पतित-पावन बाप को याद करो, इसको कहा जाता है सहज याद और सहज ज्ञान, सृष्टि चक्र का।

✺ धारणा-

1] अपने कैरेक्टर्स का रजिस्टर रखो। उसमें रोज़ का पोतामेल नोट करो। रजिस्टर रखने से अपनी कमियों का मालूम पड़ेगा फिर सहज ही उन्हें निकाल सकेंगे। खामियों को निकालते-निकालते उस अवस्था तक पहुँचना है जो एक बाप के सिवाए दूसरा कुछ भी याद न रहे। किसी भी पुरानी चीज़ में ममत्व न रहे। अन्दर कुछ भी मांगने की तमन्ना न रहे।

2] आत्मा, आत्मा को देखती है, शरीर तो रहते ही नहीं तो क्रिमिनल-आइज्ड़ कैसे होंगे इसलिए बाप कहते हैं अपने को बहन-भाई के भान से निकालते जाओ। भाई-भाई समझो। यह भी बड़ी गुह्य बात है। कभी किसकी बुद्धि में आ नहीं सकती। सिविल-आइज्ड़ का अर्थ किसी की बुद्धि में आ नहीं सकता। अगर आ जाए तो ऊंच पद पा लेवे।

3] बाप समझाते हैं अपने को आत्मा समझो, शरीर को भूलना है। यह शरीर छोड़ना भी है बाप की याद में। मैं आत्मा बाबा के पास जा रहा हूँ। देह का अभिमान छोड़ पवित्र बनाने वाले बाप की याद में ही शरीर छोड़ना है।

...2

4] कर्मातीत अवस्था को पिछाड़ी में पायेंगे तब सिविल-आइज्ड़ हो सकते हैं। फिर वह रूहानी ब्रदर्ली लव रहता है। रूहानी ब्रदर्ली लव बहुत अच्छा रहता है, फिर क्रिमिनल दृष्टि नहीं होती, तब ही ऊंच पद पा सकेंगे।

5] अवस्था तुम्हारी ऐसी चाहिए तो और कोई की याद नहीं आये।

6] कुछ भी याद न आये सिवाए बाप के। कितनी ऊंची मंज़िल है। कहाँ ठिकरियाँ, कहाँ शिवबाबा की याद। मांगने की तमन्ना नहीं होनी चाहिए।

7] तुम बच्चों की अवस्था कितनी उपराम रहनी चाहिए। कोई भी छी-छी चीज़ में ममत्व नहीं रहना चाहिए। शरीर में भी ममत्व न रहे, इतना योगी बनना है। जब सच-सच ऐसे योगी होंगे तो वह जैसे फ्रेश (ताजा) रहेंगे।

8] बाप समझाते हैं– मीठे बच्चे, तुम देवी-देवता स्वर्ग के मालिक बनना चाहते हो तो बहुत-बहुत सिविल-आइज्ड़ बनो।

9] मैं विश्व कल्याण के कार्य अर्थ निमित्त हूँ– इस जिम्मवारी की स्मृति में रहो तो कभी भी किसी के प्रति वा अपने प्रति व्यर्थ संकल्प वा व्यर्थ वृत्ति नहीं हो सकती। जिम्मेवार आत्मायें एक भी अकल्याणकारी संकल्प नहीं कर सकते। एक सेकण्ड भी व्यर्थ वृत्ति नहीं बना सकते क्योंकि उनकी वृत्ति से वायुमण्डल का परिवर्तन होना है इसलिए सर्व के प्रति उनकी शुभ भावना, शुभ कामना स्वत: रहती है।

❋ **सेवा-**

1] हरेक को कम से कम 6 घण्टा सर्विस जरूर करनी चाहिए। वैसे तो गवर्मेन्ट की सर्विस 8 घण्टा होती है परन्तु पाण्डव गवर्मेन्ट की सर्विस कम से कम 5-6 घण्टा जरूर करो।

2] कोई को भी अर्थ समझाना है। सतयुग में पाप कोई बात ही नहीं होती। वह है ही सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण सिविल-आइज्ड़। चन्द्रवंशी की दो कला कम होती हैं। चन्द्रमा की भी पिछाड़ी में आकर बाकी लकीर रहती है। एकदम निल नहीं होती है। कहेंगे प्राय: लोप हो गया। बादलों में दिखाई नहीं पड़ता। तो बाप कहते हैं तुम्हारी ज्योति भी बिल्कुल बुझ नहीं जाती है, कुछ न कुछ लाइट रहती है। सुप्रीम बैटरी से फिर तुम पॉवर लेते हो। खुद ही आकर सिखलाते हैं कि मेरे साथ तुम कैसे योग रख सकते हो। टीचर पढ़ाते हैं तो बुद्धियोग टीचर के साथ रहता है ना। टीचर जो मत देंगे वह पढ़ेंगे। हम भी पढ़कर टीचर अथवा बैरिस्टर बनेंगे, इसमें कृपा वा आशीर्वाद आदि की बात ही नहीं रहती है। माथा टेकने की भी दरकार नहीं।